

पुराने वाहनों को नहीं मिलेगा पेट्रोल-डीजल

● दिल्ली में प्रदूषण दोकने को लेकर सरकार का बड़ा फैसला



नई दिल्ली, एजेंसियाँ। राजधानी में उहोने के कहा कि दिल्ली में कुछ बड़े बहुत प्रदूषण को लेकर दिल्ली सरकार के मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने बड़ी बैठक की। बैठक के बाद मनजिंदर सिंह सिरसा ने कहा कि 31 मार्च के बाद 15 साल पुराने वाहनों को इंधन नहीं दिया जाएगा। इसके साथ ही

उहोने के कहा कि दिल्ली में कुछ बड़े होटल, कुछ बड़े कार्यालय परिसर, दिल्ली हवाई अड्डा, बड़े निर्माण स्थल हैं। हम उन सभी के लिए आपसे यह प्रदूषण को नियन्त्रित करने के लिए तुरंत एंटी-सॉमंग गन लगाना अनिवार्य करने जा रहे हैं। हम दिल्ली की सभी

अनिवार्य करने जा रहे हैं।

मंत्री ने आगे बताया कि हम दिल्ली के सभी होटलों में सॉमंग गन लगाना अनिवार्य करने जा रहे हैं। इसी तरह, हम इसे सभी व्यावसायिक परिसरों के लिए अनिवार्य बनाने जा रहे हैं। हमने आज नियन्त्रण किया है कि कलाउड सीडिंग के लिए हमें जो भी अनुपात चाहिए, हम लंगे और हम यह सुनिश्चित करेंगे कि जब दिल्ली में गंभीर प्रदूषण हो, तो कलाउड सीडिंग के माध्यम से व्यावरण कराएं जा सके और प्रदूषण को नियन्त्रित किया जा सके।

सिरसा ने पर्यावरण विभाग, एमसीडी और एन-डीएसी के साथ बैठक की। इससे पहले सिरसा

एंटी-
सॉमंग
गन पर
जोर

पहाड़ों पर बर्फबारी-
बारिश बनी आफत,
मैदानों में बारिश-
ओलावृष्टि बनी परेशानी

नईदिल्ली(आरएनएस)। उत्तर भारत में विद्रोह से पहले सर्वे एक बार फिर अपना रंग दिखा रही है। पहाड़ों पर हो रही भारी बर्फबारी और मैदानों राज्यों की बारिश के चलते मौसम फिर से ठंडा हो गया है। अब हवाओं ने लोगों को फिर से गंभीर काढ़े हो गया है। अब हवाओं के लिए मजबूर कर दिया है। भारतीय मौसम विभाग (आईएमडी) के अनुसार, शनिवार (1 मार्च) को नया पर्यावरण विकास भवित्व हो रहा है, जिसके कारण बाल छाल छाल रखने के साथ बारिश होने की सभावना है। अमिनपुर के पहाड़ी के बड़े पहाड़ हैं, जिन्हें अविंदं जेनरेलाल का प्रशासन 10 वर्षों में नहीं हटा सका। हमारी सरकार के तहत एक वर्ष के भीतर इसे साफ कर दिया जाएगा। उहोने कहा, अगर दशथ वार्षिकी पहाड़ काटकर सड़क बना सकते हैं, तो हम निश्चित रूप से कुड़े के द्वारा हटा सकते हैं। हम उनके द्वारा संकल्प से प्रेरण लेते हैं।

पर्यावरण के लिए आपसी जोर देते हैं। अब उनके द्वारा संकल्पना की साथ बैठक की। इससे पहले सिरसा

ने अपनी प्राथमिकताएं बताते हुए कहा, हमारा मिशन स्वच्छ हवा और पानी सुनिश्चित करके दिल्ली को एक स्वस्थ शहर बनाना है और हम इस दुष्करण को वास्तविकता में बदलने के लिए प्रतिबद्ध हैं। शर एवं प्रमुख परिसरों के लिए अनिवार्य करने जा रहे हैं। हमने आज नियन्त्रण किया है कि कलाउड सीडिंग के लिए हमें जो भी अनुपात चाहिए, हम लंगे और हम यह सुनिश्चित करेंगे कि जब दिल्ली में गंभीर प्रदूषण हो, तो कलाउड सीडिंग के माध्यम से व्यावरण कराएं जा सके और प्रदूषण को नियन्त्रित किया जा सके।

सिरसा ने पर्यावरण विभाग, एमसीडी और एन-डीएसी के साथ बैठक की। इससे पहले सिरसा

मणिपुर के सभी रास्ते खोले जाएं, नशे का नेटवर्क करें ध्वस्त

● बैठक के बाद
गृह मंत्री का सख्त
निर्देश



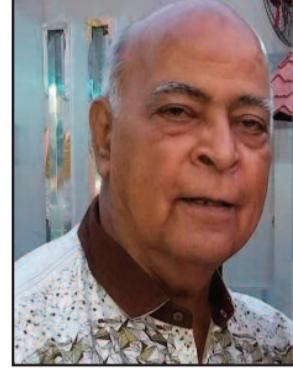
मणिपुर, एजेंसियों। केंद्रीय गृह मंत्री अमिन शह ने आज नई दिल्ली में मणिपुर में सुरक्षा स्थिति पर एक उच्च स्तरीय समीक्षा बैठक की अध्यक्षता की। बैठक में गृह मंत्री ने निर्देश दिया कि 8 मार्च 2025 से मणिपुर के सभी मार्गों पर जनता की मुक्त आवाजाही सुनिश्चित की जाए और विकास विकास भवित्व हो रहा है, जिसके कारण बाल छाल छाल रखने के साथ बारिश होने की सभावना है। अमिनपुर को नशा मुक्त बनाने के लिए नशीली दवाओं के व्यापार में शामिल पूरे नेटवर्क को ध्वस्त किया जाना चाहिए। मणिपुर की अतंरराष्ट्रीय सीमा पर निर्धारित प्रवेश बिंदुओं के दोनों ओर बाड़ लगाने का काम जल्द से जल्द पूरा किया जाना चाहिए। गृह मंत्रीलाल ने निर्देश दिया कि गृह मंत्री ने शामिल पूरे नेटवर्क के स्तर पर ध्वस्त किया जाना चाहिए। बैठक में शामिल पूरे नेटवर्क को ध्वस्त किया जाना चाहिए। मणिपुर की अतंरराष्ट्रीय सीमा पर निर्धारित प्रवेश बिंदुओं के दोनों ओर बाड़ लगाने का काम जल्द से जल्द पूरा किया जाना चाहिए। गृह मंत्री ने शामिल पूरे नेटवर्क के स्तर पर ध्वस्त किया जाना चाहिए। बैठक में शामिल पूरे नेटवर्क के स्तर पर ध्वस्त किया जाना चाहिए। मणिपुर की अतंरराष्ट्रीय सीमा पर निर्धारित प्रवेश बिंदुओं के दोनों ओर बाड़ लगाने का काम जल्द से जल्द पूरा किया जाना चाहिए। गृह मंत्री ने शामिल पूरे नेटवर्क के स्तर पर ध्वस्त किया जाना चाहिए। बैठक में शामिल पूरे नेटवर्क के स्तर पर ध्वस्त किया जाना चाहिए। मणिपुर की अतंरराष्ट्रीय सीमा पर निर्धारित प्रवेश बिंदुओं के दोनों ओर बाड़ लगाने का काम जल्द से जल्द पूरा किया जाना चाहिए। गृह मंत्री ने शामिल पूरे नेटवर्क के स्तर पर ध्वस्त किया जाना चाहिए। बैठक में शामिल पूरे नेटवर्क के स्तर पर ध्वस्त किया जाना चाहिए। मणिपुर की अतंरराष्ट्रीय सीमा पर निर्धारित प्रवेश बिंदुओं के दोनों ओर बाड़ लगाने का काम जल्द से जल्द पूरा किया जाना चाहिए। गृह मंत्री ने शामिल पूरे नेटवर्क के स्तर पर ध्वस्त किया जाना चाहिए। बैठक में शामिल पूरे नेटवर्क के स्तर पर ध्वस्त किया जाना चाहिए। मणिपुर की अतंरराष्ट्रीय सीमा पर निर्धारित प्रवेश बिंदुओं के दोनों ओर बाड़ लगाने का काम जल्द से जल्द पूरा किया जाना चाहिए। गृह मंत्री ने शामिल पूरे नेटवर्क के स्तर पर ध्वस्त किया जाना चाहिए। बैठक में शामिल पूरे नेटवर्क के स्तर पर ध्वस्त किया जाना चाहिए। मणिपुर की अतंरराष्ट्रीय सीमा पर निर्धारित प्रवेश बिंदुओं के दोनों ओर बाड़ लगाने का काम जल्द से जल्द पूरा किया जाना चाहिए। गृह मंत्री ने शामिल पूरे नेटवर्क के स्तर पर ध्वस्त किया जाना चाहिए। बैठक में शामिल पूरे नेटवर्क के स्तर पर ध्वस्त किया जाना चाहिए। मणिपुर की अतंरराष्ट्रीय सीमा पर निर्धारित प्रवेश बिंदुओं के दोनों ओर बाड़ लगाने का काम जल्द से जल्द पूरा किया जाना चाहिए। गृह मंत्री ने शामिल पूरे नेटवर्क के स्तर पर ध्वस्त किया जाना चाहिए। बैठक में शामिल पूरे नेटवर्क के स्तर पर ध्वस्त किया जाना चाहिए। मणिपुर की अतंरराष्ट्रीय सीमा पर निर्धारित प्रवेश बिंदुओं के दोनों ओर बाड़ लगाने का काम जल्द से जल्द पूरा किया जाना चाहिए। गृह मंत्री ने शामिल पूरे नेटवर्क के स्तर पर ध्वस्त किया जाना चाहिए। बैठक में शामिल पूरे नेटवर्क के स्तर पर ध्वस्त किया जाना चाहिए। मणिपुर की अतंरराष्ट्रीय सीमा पर निर्धारित प्रवेश बिंदुओं के दोनों ओर बाड़ लगाने का काम जल्द से जल्द पूरा किया जाना चाहिए। गृह मंत्री ने शामिल पूरे नेटवर्क के स्तर पर ध्वस्त किया जाना चाहिए। बैठक में शामिल पूरे नेटवर्क के स्तर पर ध्वस्त किया जाना चाहिए। मणिपुर की अतंरराष्ट्रीय सीमा पर निर्धारित प्रवेश बिंदुओं के दोनों ओर बाड़ लगाने का काम जल्द से जल्द पूरा किया जाना चाहिए। गृह मंत्री ने शामिल पूरे नेटवर्क के स्तर पर ध्वस्त किया जाना चाहिए। बैठक में शामिल पूरे नेटवर्क के स्तर पर ध्वस्त किया जाना चाहिए। मणिपुर की अतंरराष्ट्रीय सीमा पर निर्धारित प्रवेश बिंदुओं के दोनों ओर बाड़ लगाने का काम जल्द से जल्द पूरा किया जाना चाहिए। गृह मंत्री ने शामिल पूरे नेटवर्क के स्तर पर ध्वस्त किया जाना चाहिए। बैठक में शामिल पूरे नेटवर्क के स्तर पर ध्वस्त किया जाना चाहिए। मणिपुर की अतंरराष्ट्रीय सीमा पर निर्धारित प्रवेश बिंदुओं के दोनों ओर बाड़ लगाने का काम जल्द से जल्द पूरा किया जाना चाहिए। गृह मंत्री ने शामिल पूरे नेटवर्क के स्तर पर ध्वस्त किया जाना चाहिए। बैठक में शामिल पूरे नेटवर्क के स्तर पर ध्वस्त किया जाना चाहिए। मणिपुर की अतंरराष्ट्रीय सीमा पर निर्धारित प्रवेश बिंदुओं के दोनों ओर बाड़ लगाने का काम जल्द से जल्द पूरा किया जाना चाहिए। गृह मंत्री ने शामिल पूरे नेटवर्क के स्तर पर ध्वस्त किया जाना चाहिए। बैठक में शामिल पूरे नेटवर्क के स्तर पर ध्वस्त किया जाना चाहिए। मणिपुर की अतंरराष्ट्रीय सीमा पर निर्धारित प्रवेश बिंदुओं के दोनों ओर बाड़ लगाने का काम जल्द से जल्द पूरा किया जाना चाहिए। गृह मंत्री ने शामिल पूरे नेटवर्क के स्तर पर ध्वस्त किया जाना चाहिए। बैठक में शामिल पूरे नेटवर्क के स्तर पर ध्वस्त किया जाना चाहिए। मणिपुर की अतंरराष्ट्रीय सीमा पर निर्धारित प्रवेश बिंदुओं के दोनों ओर बाड़ लगाने का काम जल्द से जल्द पूरा किया जाना चाहिए। गृह मंत्री ने शामिल पूरे नेटवर्क के स्तर पर ध्वस्त किया जाना चाहिए। बैठक में शामिल पूरे नेटवर्क के स्तर पर ध्वस्त किया जाना चाहिए। मणिपुर की अतंरराष्ट्रीय सीमा पर निर्धारित प्रवेश बिंदुओं के दोनों ओर बाड़ लगाने का काम जल्द से ज

सम्पादकीय

सम्पादकीय

जल की गुणवत्ता संबंधी विवाद गंभीर

धार्मिक आस्था अक्सर तथ्यों और तर्कों से ऊपर होती है। बेशक, इसमें किसी को दखल नहीं देना चाहिए। मगर संभावित जोखिम के प्रति आगाह करना सरकारों, खास कर स्वायत्त प्रशासनिक एजेंसियों का कर्तव्य एवं उत्तरदायित्व दोनों ही है। प्रयागराज में गंगा जल की गुणवत्ता संबंधी विवाद गंभीर है। इसमें मुख्य मुद्दा पर्यावरण की गुणवत्ता को सुनिश्चित करने वाली भारत की सर्व-प्रमुख एजेंसी की केंद्रीय और उत्तर प्रदेश इकाई के बीच मतभेद का है। प्रश्न है कि ये एजेंसियां सभी स्तरों पर स्वायत्त ढंग से काम करती हैं, या ये सत्ताधारी दलों के सियासी एजेंडे से प्रभावित भी हो जाती हैं? स्वागतयोग्य है कि नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) ने इसे गंभीरता से लिया है और उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (यूपीपीसीबी) से जवाब तलब किया है। पूछा है कि क्या यूपीपीसीबी की गंगा जल की स्वच्छता संबंधी रिपोर्ट केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के निष्कर्षों के विपरीत थी। सीपीसीबी लगातार पांच दिन के नमूनों की जांच के बाद इस नतीजे पर पहुंचा कि संगम का पानी पीने और नहाने योग्य नहीं है। फिर भी उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने दावा किया है कि ये पानी नहाने और आचमन दोनों के योग्य है। इसके पक्ष में उन्होंने यूपीपीसीबी की रिपोर्ट का हवाला दिया। अब एनजीटी ने सीपीसीबी की रिपोर्ट की रोशनी में यूपीपीसीबी से जल की गुणवत्ता के बारे में विस्तृत रिपोर्ट मांगी है। सीपीसीबी के मुताबिक कई स्थानों पर गंगा में फेकल कोलीफॉर्म बैक्टीरिया मान्य स्टैंडर्ड से 1400 गुना और यमुना में 660 गुना ज्यादा मिला। 19 जनवरी को तो हर 100 मिलीलीटर में ये मात्रा सात लाख अधिकतम संभव संख्या (एमपीएन) तक पहुंच गई, जबकि इसे 500 के अंदर होना चाहिए। इस रूप में संगम का पानी नहाने योग्य जल के लिए तय प्रतिमान पर खरा नहीं उत्तरता। तो जाहिर है, लोगों ने वहां अपनी सेहत के लिए भारी जोखिम लेकर स्नान किया। धार्मिक आस्था अक्सर तथ्यों और तर्कों से ऊपर होती है। बेशक, इसमें किसी को दखल नहीं देना चाहिए। मगर संभावित जोखिम के प्रति आगाह करना सरकारों, खास कर स्वायत्त प्रशासनिक एजेंसियों का कर्तव्य एवं उत्तरदायित्व दोनों ही है। कोई सरकार अपने सियासी तकाजों के तहत इससे मुंह मोड़ भी रही हो, तो एजेंसियों को ऐसा कर्तव्य नहीं नहीं करना चाहिए। आशा है, इस मामले में एनजीटी बिना किसी दबाव से प्रभावित हुए बेहतरीन मिसाल कायम करेगा।



अशोक भारी

वक्फ बोर्ड विधेयक का कंद्रायन
मंत्रिमंडल ने 14 बदलावों के साथ
मंजूरी दे दी है और इसे विचार के
लिए भेजा जाएगा। पिछले कुछ दिनों
से विधेयक पर चर्चा की जा रही है और
अंत में, 14 बदलावों वाला विधेयक
आज संसदीय समिति को भेज दिया
गया है। समिति द्वारा सुझाई गई 44
सिफारिशों को अस्वीकार कर दिया
गया और शेष विधेयक समिति को
भेज दिया गया। इस पर लंबे समय
तक चर्चा हुई और विपक्ष इससे परेशान था। अब इसे बजट सत्र के
दूसरे चरण में जोड़ा जाएगा। भेज
जाएगा। बजट सेशन का दूसरा फेज
10 मार्च से चार अप्रैल तक
प्रस्तावित है। भाजपा के कई टॉली
लीडरों ने दावा किया है कि इस सेशन
के दौरान ही बिल पारित होने की
संभावना है। जेपीसी की 655 पत्रों
वाली इस रिपोर्ट में भारतीय जनता
पार्टी (भाजपा) के मंबरों द्वारा दिया
गए सुझाव शामिल थे। विपक्ष
सदस्यों ने इसे असर्वैधानिक कराया
दिया था और आरोप लगाया था कि
यह कदम वक्फ बोर्ड को बांद करने
देगा। भाजपा सदस्यों ने इस बात पर
जोर दिया था कि पिछले साल अगस्त
में लोकसभा में पेश किया गया बिल
वक्फ प्रोपर्टी के मैनेजमेंट में
आधुनिकता, पारदर्शिता और

जावाबदेही लाने की कोशिश करेगा। कमटी ने भाजपा सदस्यों द्वारा प्रस्तावित सभी संशोधनों को स्वीकार कर लिया था और विषयकी सदस्यों के संशोधनों को खारिज कर दिया था। वक्फ (अमेंडमेंट) बिल, 2024 को केंद्रीय अल्पसंख्यक कार्य मंत्री किरेन रीजीजू द्वारा लोकसभा में पेश किए जाने के बाद आठ अगस्त, 2024 को संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) को भेजा गया था। विधेयक का मकसद वक्फ प्रोपर्टी को विनियमित और प्रबंधित करने से जुड़े मुद्दों और चुनौतियों का समाधान करने के लिए वक्फ एक्ट, 1995 में संशोधन करना है। गौरतलब है कि अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री किरेन रिजिजू अगस्त 2024 में लोकसभा में वक्फ विधेयक लेकर आएं थे, जिसे पेश किए जाने के बाद छव्वेंट को भेजा गया था। जेपीसी में बीजेपी और सहयोगी दलों के 16 सांसद थे, जबकि विषय के 10 सांसद थे। 655 पत्रों की रिपोर्ट फरवरी महीने की शुरुआत में संसद के दोनों सदनों में पेश की गई थी। बीजेपी सांसद जगदंबिका पाल और संजय जायसवाल ने लोकसभा में जेपीसी रिपोर्ट को पेश किया था। उन्होंने संयुक्त समिति के समक्ष दिए गए साक्षों का रिकॉर्ड भी सदन के पटल पर रखा। राज्यसभा में मेधा कुलकर्णी ने जेपीसी रिपोर्ट को पेश किया था। संसदीय पैनल ने रिपोर्ट को बहुमत से स्वीकार कर लिया, जबकि पैनल में शामिल विषयकी दलों के सभी 11 सांसदों ने रिपोर्ट पर आपत्ति जताई थी। उन्होंने असहमति नोट भी पेश किए थे। जेपीसी रिपोर्ट सदन में रखे जाने के समय इस पर काफी हांगामा हुआ था। विषयकी सदस्यों ने सरकार पर बड़े आरोप लगाए थे। उसके बाद गृह मंत्री अमित शाह ने स्पष्ट किया था कि रिपोर्ट में विषयकी के असहमति नोट को रखे जाने से कोई



आपत्ति नहीं है

बिल भारत के पहले प्रधानमंत्री पांडित नेहरू के द्वारा रचा गया था। उन्होंने अल्पसंख्यकों को खुश करने के लिए जितनी तरकीबें चल सकती थीं, अपनाई। वक्फ उनमें से एक है। कांग्रेस ने इस बिल के जरिए अल्पसंख्यकों को जितना खुश कर सकती थी, किया। वक्फ बिल पर किसी ने आपत्ति नहीं की क्योंकि यह कांग्रेस की ही संतान थी और इतने सालों से सत्ता में थी। इस बिल की आड़ में मुसलमानों ने इस देश पर बेहद अत्याचार किए। मुस्लिम संगठनों ने हिंदुओं की भूमि पर कब्जा कर लिया और भूमि पर दावा किया क्योंकि उस जगह पर मुस्लिम संगठन का कोई निशान नहीं था। यह वर्षों से चल रहा था, लेकिन इसके खिलाफ बहुत चिल्ड्रिया गया और केंद्र में कांग्रेस सरकार और हिंदू जाग गए। परिणाम यह है कि वक्फ संशोधित संशोधन विधेयक अब पेश किया जा रहा है। वक्फ विधेयक में, विपक्षी दलों द्वारा सुझाई गई 44 सिफारिशों को खारिज कर दिया गया था, जबकि सत्तारूढ़ दलों द्वारा 14 सिफारिशों पारित की गई थीं। 2013 में, यूपीए सरकार ने वक्फ बोर्ड की शक्ति में वृद्धि की थी। महिलाएं, गरीब

हिलाएँ आदि वक्फ बोर्ड की शक्ति दाने की माँग कर रही थीं, लेकिन सरकार ने कहा कि मुसलमान आप नहीं हैं, बल्कि शक्तिशाली लोग। इसलिए मोदी सरकार ने मुस्लिम वक्फ बोर्ड एक्ट में संशोधन करके से बदलने का विचार किया था। वब पहला कदम उठया गया है। वह अपके खिलाफ अपील नहीं करकता था।

केवल वक्फ बोर्ड ही अपील कर सकता था ऐसे में सबाल आया गया कि वक्फ बोर्ड कैसे न्याय दे रेगा। तदनुसार, कोई भी वक्फ बोर्ड ने फैसले के खिलाफ अपील नहीं कर सकता था और न तो केंद्र सरकार और न ही राज्य सरकार बोर्ड के विरिणामों में हस्तक्षेप कर सकती थी। वब यह स्थिति बदलेगी और बदलत वक्फ बोर्ड के फैसले को बदल सकती है। भारत में वक्फ की ललत दुनिया में सबसे ज्यादा मानी जाती है। सटीक संख्या बताने के लए, संपत्ति 200 करोड़ रुपये से अधिक है और केवल वक्फ बोर्ड के से इस पर अधिकार क्षेत्र है। जो लोग वक्फ बोर्ड को नियंत्रित करते हैं, वे भी अधिनियम के खिलाफ हैं। ले ही कांग्रेस यह बिल सिर्फ सलमानों को खुश करने के लिए

सरोकार



ਕਾਮੁਕਤਾ ਕੋ ਸ਼ਹਿਨਦ ਕਰਤੀ ਪਾਪ ਸਂਕ੍ਰਤਿ



महिमामंडन किया गया। इसी प्रकार, मीडिया में पेशेवर भूमिकाओं का चित्रण कैरियर की आकांक्षाओं को आकार देता है। फ़िल्म कारगिल गर्ल (2020) ने लैंगिक भूमिकाओं में बदलाव पर प्रकाश डालते हुए सेना में महिलाओं की भर्ती को प्रोत्साहित किया। मनोरंजन मीडिया अवसर लैंगिक न्याय पर राष्ट्रीय चर्चा को बढ़ावा देता है, जैसा कि सत्यमेव जयते कार्यक्रम में देखा गया। जो घेरेलू हिंसा और कन्ना भृण हत्या जैसे मुद्दों को सामने लाया। लम्जे समय से चल रहे टेलीविजन धारावाहिक भी परिवारिक लैंगिक भूमिकाओं को स्थापित करते हैं, तथा भारतीय धारावाहिकों में आमतौर पर देखी जाने वाली आज्ञाकारी बहू की रुद्धिबद्ध छवि को कायम रखते हैं। जनांदोलनों और सक्रियता के बीच सम्बंध को अवसर मीडिया प्रतिनिधित्व द्वारा सुगम बनाया जाता है। फ़िल्म छपाक (2020) ने एसिड अटैक सर्वाङ्गवस्र के संघर्षों पर प्रकाश डाला और आईपीसी के तहत सख्त दंड सहित कानूनी सुधारों की वकालत की। यद्यपि लोकप्रिय संस्कृति ने भेदभावपूर्ण लैंगिक मानदंडों को सुदृढ़ करने में भूमिका निर्भाउं है। इसमें उन्हें चुनौती देने और बदलने की शक्ति भी है। इसका एक उद्घेष्णीय उदाहरण है द मार्वल समिसेज। मैसेल, 1950 और 1960 के दशक की पृष्ठभूमि पर आधारित है, जिसमें गृहिणी मिरियम मैसेल को स्टैंड-अप कॉमेडी में अपनी प्रतिभा का पता चलता है। इस शृंखला को न केवल आलोचनात्मक प्रशंसा मिली, बल्कि इसमें महिला सशक्तिकरण, सपनों की खोज और \div आर्द्धा \div

गृहणों का सामाजिक अपक्षेत्र आ समुक्त जैसे महत्वपूर्ण विषयों को भी उदाया गया। यह लोकप्रिय संस्कृति में अनेक उदाहरणों में से एक है। संगीत और फ़िल्में प्रायः प्रेम को नियंत्रित और अधिकारपूर्ण दृष्टिकोण से चित्रित करती हैं। कुछ बॉलीवुड गाने जुनूनी पुरुष प्रेमी की छिप को कायम रखते हैं। एकशन फ़िल्मों में अक्सर आक्रामक, प्रभावशाली पुरुषों को रोल मॉडल के रूप में दिखाया जाता है। हाल ही में प्रदर्शित फ़िल्मों में हिंसक और सत्तावादी पुरुष नायकों को प्रमुखता से दिखाया गया है। महिलाओं को आमतौर पर पालन-पोषण करने वाली भूमिकाओं में दिखाया जाता है, जबकि पुरुषों को अधिकार वाले पदों पर रखा जाता है। हालाँकि, फ़िल्म तुम्हारी सुलु (2017) ने अपरंपरागत करियर में महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों को प्रदर्शित करके इन मानदंडों को चुनौती दी। मीडिया अक्सर सुंदरता के आदर्श के रूप में पतलेपन और गोरी त्वचा को बढ़ावा देता है, गोरापन लाने वाली क्रीम के विज्ञापन प्रचलित हैं, जो बॉलीवुड में गोरी त्वचा वाली अभिनेत्रियों के प्रति

आ रामपद का बढ़ावा दन शर्ता है। इसके अतिरिक्त, गंग पात्रों को अवसर हास्य के बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया जाता था कुछ फ़िल्में व्यांग्यात्मक के माध्यम से समलैंगिकण को महत्ववहीन बना देती हैं। एक मनोरंजन मीडिया ने नक मुद्दों को आगे बढ़ाने और जागरूकता बढ़ाने में भूमिका है, लेकिन यह हानिकारक नामों को भी बढ़ावा देता है। मैं सार्थक सामाजिक परिवर्तन लिए, लिंग-संवेदनशील अधिकार, विविध चित्रण और विवाह कहानी कहने पर अधिक ध्यान की आवश्यकता है। मीडिया को प्रिय संस्कृति महिलाओं के सामाजिक दृष्टिकोण, लैंगिकता और सामाजिक मानदंडों को देने में महत्वपूर्ण प्रभाव है। फ़िल्में, टर्लीविजन, और सोशल मीडिया या तो दियोंगों को मजबूत कर सकते हैं या हिला सशक्तिकरण में बाधा देते हैं। या फिर सकारात्मक विषय के लिए शक्तिशाली एजेंट के काम कर सकती हैं।

समसायक

स्वतंत्रता की अमर साइता, सरोजिनी नायडू

सराजना नायडू—एक एसा नाम जा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का गैरवशाली गाथा में स्वर्णाक्षरों से अंकित है। वे केवल एक क्रांतिकारी नेत्री नहीं थीं, बल्कि विलक्षण कवयित्री, प्रखर वक्ता और समाज सुधारक भी थीं। उनकी वाणी में ओज और विचारों में अद्भुत स्पष्टता थी। उनके शब्दों में विद्रोह की ज्वाला थी, तो कविताओं में कामल भावनाओं की सरिता प्रवाहित होती थी। 2 मार्च 1949 को यह अनमोल स्तितारा अस्त हो गया, लेकिन उनकी विचारधारा की रोशनी आज भी भारतीय जनमनस को आलोकित कर रही है। उनकी पुण्यतिथि मात्र एक तिथि नहीं, बल्कि उनके आदर्शों को आनंदसात करने और उनके सपनों के भारत के निर्माण में योगदान देने की प्रेरणा देती है। उनका स्मरण केवल औपचारिकता नहीं, बल्कि उनके जज्बे को चेतना में जीवित रखने का संकल्प है। सरोजिनी नायडू का जन्म 13 फरवरी 1879 को हैदराबाद में हुआ। उनके पिता अधोरनाथ चट्टोपाध्याय विद्रोह और वैज्ञानिक थे, जबकि माता वरदा सुंदरी कवयित्री थीं। इस बौद्धिक और सांख्यिक वातावरण में पली-बढ़ी सरोजिनी बचपन से ही लेखन में रुचि रखने लगी। महज 13 वर्ष की उमे में उहोंने ⁺लेडी ऑफ दी लेक ⁻ नामक लंबी कविता लिखी, जिसने उनकी काव्य प्रतिभा को उजागर किया। आगे चलकर उनकी लेखनी इतनी प्रभावशाली बनी कि उन्हें ⁻भारत कोकिला ⁺ कहा जाने लगा। उनकी कविताओं में भारतीय संस्कृति, प्रकृति और देशप्रेम की झलक मिलती है। सौंदर्य, विद्रोह और राष्ट्रीयता का अनूठा समावेश उनकी रचनाओं को विशेष बनाता है। लेकिन सरोजिनी नायडू केवल एक कवयित्री भर नहीं थीं, बल्कि स्वतंत्रता संग्राम की निःड सेनानी भी थीं। महात्मा गांधी से प्रेरित होकर उहोंने स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भूमिका निर्भाई और महिलाओं को संग्राम से जोड़ने का कार्य किया। 1925 में वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की प्रथम भारतीय महिला अध्यक्ष बनीं, जो उस समय महिलाओं के लिए ऐतिहासिक उपलब्धि थी। उनका नेतृत्व महिलाओं की भागीदारी को नए आयाम देने वाला साबित हुआ ब्रिटिश शासन के खिलाफ उहोंने सत्याग्रह और असहयोग आंदोलन में सक्रिय भूमिका निर्भाई। 1930 में दांडी मार्च के दौरान वे महात्मा गांधी के साथ कदम से कदम मिलाकर चलीं और नमक सत्याग्रह में गिरफ्तारी दी। 1942 के भारत छोड़े आंदोलन में भी उहोंने जेल की यातनाएँ छोलीं, लेकिन उनके संकल्प और साहस को कोई

डिगा नहीं सका। उनका स्पष्ट मत था कि स्वतंत्रता की लड़ाई के बाद पुरुषों तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि महिलाओं को भी समान रूप से इसमें भाग लेना चाहिए। उनके इस विचार ने महिलाओं के भीतर नई ऊर्जा का संचार किया और उन्हें सामाजिक और राजनीतिक जीवन में सक्रिय होने के लिए प्रेरित किया। उनकी कविताएँ ओजस्विता और सौंदर्य का अद्भुत संगम प्रस्तुत करती हैं। उनका पहला कविता संग्रह - गोल्डन थ्रेशहोल्ड- (1905) प्रकाशित होते ही उन्हें अंतरराष्ट्रीय पहचान दिला गया। उनकी अन्य प्रसिद्ध कृतियाँ - द बर्ड ऑफ टाइम- (1912) और -द ब्रोकन विंग- (1917) भी साहित्यिक जगत में सराही गईं। अपेंजी भाषा में रचित उनकी कविताएँ भारतीय संस्कृति और राष्ट्रभक्ति की सुगंध से सराबोर थीं। अपनी सशक्त अधिव्यक्ति के माध्यम से उन्होंने न केवल समाज की संवेदनाओं को शब्द दिए, बल्कि स्वतंत्रता संग्राम की ज्वाला को भी प्रज्वलित किया। स्वतंत्रता के बाद उन्हें उत्तर प्रदेश की पहली महिला राज्यपाल बनने का गौरव प्राप्त हुआ। इस पद पर रहते हुए उन्होंने सामाजिक कल्याण और शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किए। वे महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए सतत प्रयासरत रहीं और उनके उत्थान के लिए कार्य करती रहीं। उनका जीवन सादगी और संघर्ष का प्रतीक था। वे केवल एक राजनीतिक नेता नहीं, बल्कि एक संवेदनशील साहित्यकार, ओजस्वी वक्ता और निरं ख्याली वक्ता थीं। अपने हास्यबोध और सजीव वकृत्व कला के लिए प्रसिद्ध सरोजिनी नायडू की बाणी में जोश और विचारों में स्पष्टता थी, जिससे वे लोगों को प्रभावित करने में सक्षम थीं। उन्होंने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित किया और उनके लिए सामाजिक व राजनीतिक स्तर पर नए द्वार खोले। 12 मार्च 1949 को यह अनमोल ज्योति बुझ गई, लेकिन उनकी रोशनी सदियों तक भारतीय जनमानस को आलोकित करती रही। उनका जीवन संघर्ष, समर्पण और अटूट देशभक्ति का जीवंत उदाहरण है। वे केवल इतिहास का एक अद्याय नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। आज जब हम महिला सशक्तिकरण और समानता की बात करते हैं, तो हमें सरोजिनी नायडू जैसे महान व्यक्तियों से प्रेरणा लेनी चाहिए।

राशिफल



	आज आपका दिन खुशनुमा पलों से भरा रहेगा। आज परिवार से खुशखबरी मिलेगी। ईश्वर की कृपा से आज आपके सभी काम सफल होंगे। आज आपको अपने काम में ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है। आपको प्रोजेक्ट में अपने कलीग की मदद मिलेगी। आज आपकी किसी रिश्तेदार से फोन पर बात हो सकती है, आपको कुछ नया सुनने को मिलेगा।
	आज आपका दिन अच्छा रहने वाला है। घर खरीदने का विचार कर रहे लोगों के लिए आज का दिन शुभ है। आज आपका मन घेरलू काम काज में लगेगा। आज बॉस आपको किसी नए प्रोजेक्ट पर काम करने को कह सकते हैं। डिप्लोमा की तैयारी कर रहे छात्रों को पढ़ाई करने की जरूरत है। कपड़े का व्यापार कर रहे लोगों का कारोबार अच्छा चलेगा।
	आज आपका दिन नई उमंगों के साथ शुरू होने वाला है। आज आपकी सूझा-बूझा से किसी काम में सफलता हासिल होगी। गौ सेवा करने का अवसर मिलेगा। आर्थिक समस्या से परेशान लोगों को राहत मिलेगी। आज आप जीवनसाथी के लिए नई ज्वेलरी खरीद सकते हैं, जीवन में आनंद बढ़ागा। डॉक्टर्स के लिए आज का दिन अच्छा रहेगा।
	आज आपका दिन खुशियों से भरा रहने वाला है। आपके दोस्त आपसे मदद की गुहार करेंगे, आप उन्हें निराश नहीं करेंगे। बिजनेस कर रहे लोगों को अच्छा मुनाफा होगा। आज आप शारीरिक करने का मन बनायेंगे। आज आप अपनी बहन को कुछ गिफ्ट दे सकते हैं, जिससे आपका रिश्ता मजबूत बनेगा। आज आप किसी जरूरी मीटिंग में शामिल होंगे।
	आज आपका दिन शांत रहेगा। आज आपकी मुलाकात किसी अजनबी से होगी, जिससे आप जीवन की नई सीधी लेंगे। आपकी कड़ी मेहनत से लोग प्रभावित होंगे और आपका अनुसरण करेंगे। आज आप ऑफिस के किसी काम में उलझे रहेंगे। इस राशि के स्टूडेंट्स कॉलेज में कुछ नया सीखेंगे और पढ़ाई की तरफ झुकाव बढ़ेगा।
	आज आपका दिन अच्छा रहने वाला है। सिविल इंजीनीयर्स के लिए दिन बेहतरीन रहेगा। स्वास्थ्य समस्या से परेशान लोग आज खुद को बेहतर महसूस करेंगे। जॉब की तलाश कर लोगों को अच्छी जॉब मिलने के योग हैं। दाम्पत्य रिश्ता मजबूत बनेगा, परिवार के साथ क्रान्तिकारी टाइम स्पेंड करेंगे।

कौशाम्बी/प्रयागराज/सीतापुर

दुर्लभ रोग दिवस पर लायन्स क्लब जौनपुर मेन ने किया जागरूक

अपनी प्रतिरोधक क्षमता को रखे मज़बूत, तो रहेगे स्वस्थ्य—डा वी एस उपाध्याय

लोकमित्र ब्लूरो

जौनपुर लायन्स क्लब जौनपुर मेन द्वारा दुर्लभ रोग दिवस के अवसर पर रात्रि में स्थान ऊर्दू बाजार शिव वृन्दावन हाल में दुर्लभ बीमारियों के बारे में लोगों को जागरूक करने के उद्देश्य से कार्यक्रम आयोजित किया गया। संस्थान्यक्ष संजय केडिया ने लोगों का स्वापन दिया। शक्ति अहमद ने घंटा बदना पढ़ी।

इस अवसर पर वरिष्ठ हृदय व डायबिटीज रोग विशेषज्ञ डा वीएस उपाध्याय ने कहा कि इन्हन सिस्म कमजोर होने और शरीर पर पैदैजेन के अंटेक से किसी व्यक्ति को कई तरह की बीमारियों का समान करना पड़ सकता है। इन डिजेज का अलग-अलग तरह की मेडिसिन और उपचार विकल्पों से त्रैक किया जाता है। जबकि कुछ रोग इन्हें असामान्य होते हैं कि उनका उचाचार कर पाना तो दूर लोग उनके होने का कारण और लक्षण भी नहीं समझ पाते। ऐसी बीमारियों को रेयर डिजेज-दुर्लभ रोग की सूची में रखा जाता है। वरिष्ठ

इसलिए अपने शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बज़बूत रखे जिससे आप स्वस्थ्य रह सकें।

जीएटी एरिया लीडर डा शितिज शर्मा ने कहा कि दुनिया भर में कुछ लोग ऐसे हैं जो दुर्लभ किस्म की बीमारियों से ग्रसित हैं। इनमें से ज्यादातर लाइलाज होने के कारण प्राणात्मक लगभग आपी दुर्लभ बीमारियों के प्रति सभी को जागरूक करने के उद्देश्य से फरवरी के अंतिम दिन 28 फरवरी (या लीप वर्ष में 29 फरवरी - वर्ष का एक छोटे प्रतिशत को प्रभावित करते हैं) दुर्लभ रोग शरीर के दुर्लभ रोग दिवस या रेयर डिजेज डे के रूप में मनाया जाता है। वरिष्ठ

आवसर विकलांगता या समय से पहले मौत का कारण बताते हैं।

डा मदन मोहन वर्मा ने कहा कि दुर्लभ रोग वर्षाने के अवसर एक विश्व दिवस एक विश्व दिवस में लोगों को जागरूक करने के उद्देश्य से बाल रोग विशेषज्ञ डा अजोन ने कहा कि दुर्लभ बीमारियों में दुर्लभ कैमर, अटोइंजून रोग, जम्जात डिसऑर्ज और स्क्रामपक रोग भी शामिल हैं। लगभग आपी दुर्लभ बीमारियों वच्चों को प्रभावित करती है, जबकि बाकी लगभग आपी दुर्लभ बीमारियों के लिये एडट एज में प्रकट होती है। आगे कहा कि दुर्लभ रोग वो होते हैं, जो आवादी के एक छोटे प्रतिशत को प्रभावित करते हैं। दुर्लभ रोग शरीर के कई अंगों को प्रभावित करते हैं और



विश्व में लगभग लीस करोड़ लोग दुर्लभ रोग से पीड़ित हैं। इस वर्ष, दुर्लभ रोग दिवस की थीम है : आप जितना सोच सकते हैं, उससे कहीं अधिक; दुर्लभ अनुभवों का संकलन। है। यह दुर्लभ रोगों से पीड़ित लोगों की अनूठी चुनौतियों, रोगियों में लचीलन और अनकहे अनुभवों को उजागर करने के लिए एक वैश्विक आयोजन है।

संचालन से मो सुष्टुपा ने किया। आचार संयोजक अश्वनी बैंकर ने किया। अन्त में लोगों को प्रमाणपत्र प्रदान किया गया।

इस अवसर पर चार्टर्ड सचिव अरुण त्रिपाठी, कोषाण्यश्व रामकुमार साहू, सुरेश चन्द्र गुरा, सोमेश्वर केसरवानी, गोपीचंद्र साहू, मोजा चन्द्रप्रीदी, शशुभ्र मौरी, डा अमित पाण्डेय, संजय श्रीवास्तव, संदीप गुरा, लखन श्रीवास्तव, डॉ शिवानन्द अग्रहरी, आर पी सिंह, परमजीत सिंह, संजय सिंघनिया, अनिल वर्मा, नीरज शाह, योगेश साहू, रितेश साहू व अधिषेध बैंकर आदि उपस्थित हैं।

डा सुशील अग्रही ने बताया कि

राशन दुकान हड्डपने की साजिश की शिकायत

समाधान में छाया रहा डेलौहा गांव का मामला



बताया गया कि राशन की दुकान पिछड़ी जाति के लिए आवंटित थी, 22 जनवरी को राशन की दुकान का चयन किया जाना था। कुल नौ समूहों ने राशन की दुकान के लिए आवेदन कर रखा था। बिना चुनाव के ही शकर भगवान समूह का चयन कर लिया गया था।

जानकारी होने पर अन्य समूहों की महिलाओं ने इस पर आपत्ति किया। मामला एसडीएम से लेकर अच्युत अधिकारियों तक पहुंचा।

शिमला ने बताया कि चयन की गई,

राशन की दुकान के लिए आपत्ति

लगा दी गई है, अभी तक शिकायत

का निस्तारण नहीं हो सका। डेलौहा

गांव की कंचन विश्वकर्मा, शिमला पटेल, कान्ति देवी, चंदलली, अकुन देवी सहित कई ने एसडीएम को दिए गए

जायज के राशन दुकानदार का मामला समाधान दिवस में गरमाया रहा।

शिकायत की गई कि राशन दुकान के लिए एक समूहों के जातीय व्यवस्था में उलटफेर किया गया है। यह गम्भीर विषय है इसकी जांच कर इसे दुरुस्त किया जाया। डेलौहा गांव की कंचन

विश्वकर्मा, शिमला पटेल, कान्ति

देवी, चंदलली, अकुन देवी सहित

सही ढंग से नहीं किया गया है,

जायज के बाल दुकानदार का मामला समाधान दिवस में गरमाया रहा।

शिकायत की गई कि राशन दुकान के लिए

एक समूहों के जातीय व्यवस्था में उलटफेर किया गया है। यह गम्भीर विषय है इसकी जांच कर इसे दुरुस्त किया जाया। डेलौहा गांव की कंचन

विश्वकर्मा, सिमला पटेल, कान्ति

देवी, चंदलली, अकुन देवी सहित

सही ढंग से नहीं किया गया है,

जायज के बाल दुकानदार का मामला समाधान दिवस में गरमाया रहा।

शिकायत की गई कि राशन दुकान के लिए

एक समूहों के जातीय व्यवस्था में उलटफेर किया गया है। यह गम्भीर विषय है इसकी जांच कर इसे दुरुस्त किया जाया। डेलौहा गांव की कंचन

विश्वकर्मा, सिमला पटेल, कान्ति

देवी, चंदलली, अकुन देवी सहित

सही ढंग से नहीं किया गया है,

जायज के बाल दुकानदार का मामला समाधान दिवस में गरमाया रहा।

शिकायत की गई कि राशन दुकान के लिए

एक समूहों के जातीय व्यवस्था में उलटफेर किया गया है। यह गम्भीर विषय है इसकी जांच कर इसे दुरुस्त किया जाया। डेलौहा गांव की कंचन

विश्वकर्मा, सिमला पटेल, कान्ति

देवी, चंदलली, अकुन देवी सहित

सही ढंग से नहीं किया गया है,

जायज के बाल दुकानदार का मामला समाधान दिवस में गरमाया रहा।

शिकायत की गई कि राशन दुकान के लिए

एक समूहों के जातीय व्यवस्था में उलटफेर किया गया है। यह गम्भीर विषय है इसकी जांच कर इसे दुरुस्त किया जाया। डेलौहा गांव की कंचन

विश्वकर्मा, सिमला पटेल, कान्ति

देवी, चंदलली, अकुन देवी सहित

सही ढंग से नहीं किया गया है,

जायज के बाल दुकानदार का मामला समाधान दिवस में गरमाया रहा।

शिकायत की गई कि राशन दुकान के लिए

एक समूहों के जातीय व्यवस्था में उलटफेर किया गया है। यह गम्भीर विषय है इसकी जांच कर इसे दुरुस्त किया जाया। डेलौहा गांव की कंचन

विश्वकर्मा, सिमला पटेल, कान्ति

देवी, चंदलली, अकुन देवी सहित

सही ढंग से नहीं किया गया है,

जायज के बाल दुकानदार का मामला समाधान दिवस में गरमाया रहा।

शिकायत की गई कि राशन दुकान के लिए

एक समूहों के जातीय व्यवस्था में उलटफेर किया गया है। यह गम्भीर विषय है इसकी जांच कर इसे दुरुस्त किया जाया। डेलौहा गांव की कंचन

विश्वकर्मा, सिमला पटेल, कान्ति

देवी, चंदलली, अकुन देवी सहित

सही ढंग से नहीं किया गया है,

जायज के बाल दुकानदार का मामला समाधान दिवस में गरमाया रहा।

शिकायत की गई कि राशन दुकान के लिए

एक समूहों के जातीय व्यवस्था में उलटफेर किया गया है। यह गम्भीर विषय है इसकी जांच कर इसे दुरुस्त किया जाया। डेलौहा गांव की कंचन

